IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Issue , 11A 2022

मुस्लिम समाज की मानसिकता का सूक्ष्म चित्रण करता उपन्यास: बशारत मंजिल

डॉ. साहेब हुसेन जहागीरदार

सह-प्राध्यापक, हिंदी विभाग., अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर (कर्नाटक)

Email: sjjahagirdar123@gmail.com

मंजूर एहतेशाम उन मुस्लिम कथाकारों के श्रेणी में आते हैं जिन्होंने हिंदी कथा-साहित्य में भारतीय मुस्लिम जनमानस को अपनी लेखनी से वाणी दी है। कुछ दिन और, सूखा बरगद, दास्तान-ए-लापता, पहर ढलते आदि उपन्यासों के बाद सन 2004 में उनका उपन्यास 'बशारत मंजिल' प्रकाशित हुआ । यह उपन्यास एक मुस्लिम परिवार की तीन से अधिक पीढ़ियों के जीवन वृत्तांत को प्रस्तुत करता है, जो 1857 के दिल्ली की बशारत मंजिल है । उपन्यास "दिल्ली ही के बारे में है - पुराना यानि सन 1947 से पहले की दिल्ली। मेरी कहानी 15 अगस्त 1947 तक घिसटती नहीं जाती, उससे पहले ही खत्म हो जाती है। हाँ यकीनन जो कुछ भी उसमें होता है वह इस तारीख से पहले ही हो-हुआ चुकता है। "[1]

इस उपन्यास का कथानायक संजीदा अली सोज एक ऐसा इंसान है जो शायर है, गाँधीवादी है साथ ही साथ प्रगतिशील मुसलमान है। इस उपन्यास के कथानक के सन्दर्भ में स्वयं-उपन्यासकार लिखता है, "एक व्यक्ति और उसके परिवार की कहानी जो एक जमाने में हर जगह था। शायरी से लेकर सियासत यानि तुम्हारे शब्दों में हकीकत से लेकर फसाने तक, हर जगह! लेकिन आज जिसका उल्लेख न तो साहित्य में है, न इतिहास में । संजीदा सोज और बशारत मंजिल की कहानी । बिल्लो और बिब्बो की कहानी। गजल की कहानी। इन तीनों बहनों की माँ, अमीना बेगम की कहानी । सोज की दूसरी पत्नी, जो पहले तवायफ थी और उसके बेटे की कहानी । सारी कहानियों की जो एक कहानी होती है, वह कहानी । मेरी और तुम्हारी कहानी भी उससे बहुत हटकर या अलग नहीं हो सकती। न है। "[2] यह उपन्यास उन सारे लोगों की जिंदगियों को दर्शाता है जिन्होंने 1857 से लेकर 1947 तक के सुख दुखों को भोगा है। इस उपन्यास का कथानक इतिहास और कल्पना का मिश्रण है। यह वह दौर था जब पूरा देश एक संघर्ष और बदलाव की परिस्थितियों से गुजर रहा था। उस ऐतिहासिक कालखंड को उपन्यास के पत्रों की नजर से देखना एक रोचक अनुभव है। इस उपन्यास में ऐसी कई ऐतिहासिक महत्व की घटनाएँ हैं, जो हमे उस समय के भारत को नजदिक से समझने में मदत करती हैं। वलीउल्लाह की तहरीक से लेकर, खिलाफत आन्दोलन, स्वराज की माँग, मुस्लिम लीग और कांग्रेस की गतिविधियाँ,

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

गाँधी जी की राजनीतिक यात्रा आदि ऐसी घटनाएँ हैं जो पाठकों के ज्ञान में वृद्धि के साथ-साथ उनकी संवेदनाओं को झकझोर देती हैं।

संजीदा अली के नाना मिर्जा जमाल बेग 1857 के गदर के बाद दिल्ली से जान बचाकर अपनी पत्नी और बेटी के साथ भोपाल आये थे। गदर में उनके तीनों बेटे जलाल, अफजल और बिलाल मरे गए थें । मिर्जा जमाल बेग पढ़े-लिखे मुसलमान थे । उन्होंने 1857 की गदर में दिल्ली की बर्बादी को बहुत ही नजदीक से देखा था । कई मुसलमानों को मार दिया गया था । अंग्रेजों के हिन्दुस्तानी सिपाहियों ने ही दिल्ली को लूटा था । इस विचार को उपन्यासकार ने मिर्जा जमाल बेग के कथन से स्पष्ट किया है, "उन बदमाशों ने दिल्ली को लूटा और खुक कर दिया । दुर्रानी और अब्दाली तो बाहर से आए थे मगर यह थी निरी स्वदेशी लुटेरों की पहली किस्म!" [3] संजीदा अली के जीशान अली कानपूर के निवासी थे, जो अब घर-दामाद बने थे । संजीदा अली का बड़ा भाई बन्दा अली कहाँ जो उससे उन्नीस वर्ष बड़ा था । जीशान अली को अंग्रेजों द्वारा विद्रोह के अपराध में सजा दी जाती है । मुल्ला-मौलवियों की धर्मांध

टिप्पणियों के बाद मुस्लिम समुदाय अंग्रेजी शिक्षा से दूर होता जा रहा था । ऐसे समय में अलीगढ़ से सर सैयद अहमद खां ने समय के साथ आगे बढने के लिए बुनियादी शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी शिक्षा को पाने के लिए मुसलमानों को आह्वान किया था । तत्कालीन बहुत सारे मुस्लिम युवक सर सैयद अहमद खां से प्रभावित होकर नई शिक्षा और अंग्रेजी को अपनाया था । इसे बन्दा अली के शिक्षा के संदर्भ में उपन्यास में कुछ इस प्रकार वर्णित है, "वह हाफिज तो थे ही, अरबी-फारसी की शिक्षा रियासत के बड़े आलिमों से पाई थी, अब अंग्रेजी भी सीख गए थे । नई तालिम क्या होती है, यह सर सयैद का सान्निध्य पाकर अच्छी तरह समझ गए थे । "[5] लेकिन कट्टरपंथी मुस्लिमों द्वारा सर सयैद अहमद खां का बहुत विरोध हुआ । उन्हें नाना-प्रकार से प्रताड़ित किया गया । यहाँ तक कि उन्हें काफिर का फतवा तक दे डाला । इसे उपन्यास में संजीदा के कथन के माध्यम से स्पष्ट किया है, "खुद सर सयैद के काम में सबसे ज्यादा अडचनें मुसलमानों ने ही डालीं । उनके बारे में कुफ्र के कितने और कहाँ-कहाँ से फतवे दिए गए, वह तफसील भूल गए?" [6]

भारत में भाषाओं को धार्मिक रंग दे दिया जाता है । देशी-विदेशी होने का आरोप लगाया जाता है । उर्दू भाषा भी ऐसे ही राजनीतिक षड्यंत्र का शिकार हो गई है । उसे मुसलमानों की भाषा का लेबल लगाकर विदेशी भाषा कहकर आरोपित किया जाता है, जबकि वह भाषा शुद्ध भारतीय है, यहीं जन्मी है । इसे उपन्यासकार ने उपन्यास के एक पात्र मशहूर शायर दाग देहलवी के कथन के माध्यम से स्पष्ट किया है, "उर्दू हमला करके कहीं बाहर से नहीं आई, हिंदुस्तान में ही पैदा होकर पली-बढ़ी है । "[7] तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों से मुसलमान दुखी था । हिंदू और मुस्लिम नेता समाज को बाँट रहे थे । अंग्रेजों का अत्याचार बढ़ रहा था । मुस्लिम समाज एक ओर इन सबसे दुखी था तो दूसरी ओर इससे आगे कैसी स्थितियां उत्पन्न होंगी इस पर संदेह था ।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

इसे उपन्यासकार ने दाग देहलवी की सोच के माध्यम से स्पष्ट किया है, "गुस्सा, कड़वाहट, शक । हिंदू पर । अंग्रेज पर । कांग्रेस पर । स्वराज पर स्वदेशी पर । 'बिके हुए' मुसलमान पर बदरूद्दीन तैयब जी पर । बालगंगाधर तिलक और शिवाजी महाराज पर जय-जयकार और गणपति के त्यौहारों पर । "[8]

यह वह समय था जब अंग्रेजों ने मुसलमान और हिंदुओं के कट्टरपंथी नेताओं को भड़काकर एक दूसरे समुदाय को विभाजित करने का प्रयास किया था । हिंदू-मुस्लिम नेता अपने धर्म के अनुयायिओं को एक दूसरे के शत्रु साबित करने में तुले थे । मुसलमानों को यह बताया जा रहा था कि कांग्रेस हिंदुओं की पार्टी है । ऐसे समय में तिलमिलाकर संजीदा अली अपनी माँ जहाँआरा बेगम से पूछता है, "क्या मुसलमान इस मूलक में वह लिबास पहनकर आए थे या वह जबान बोलते हुए जिन्हें उन्होंने आज अपनी पहचान का निशान बना लिया है? वह हिंदू-मुसलमान की अलहेदगी क्या है और मुसलमान को कांग्रेस से दूर रहने के मशवरे क्यों है?"[9] मुसलमानों में एक आम धारणा बन गई थी कि कांग्रेस हिंदुओं से जुडी पार्टी है, वह मुसलमानों की मांगों को अनदेखा करती है । उससे जुड़ना उनके धर्म के खिलाफ है और जो भी मुस्लिम व्यक्ति कांग्रेस से जुड़ जाता है मुस्लिम समाज उसे हीन दृष्टि से देखता । उपन्यास में कुछ इस प्रकार विन्यस्त है, "उस जमाने में जब हकीम अजमल कहाँ, डाक्टर अंसारी या मौलाना आजाद जैसे नाम कांग्रेस में नहीं थे, न महात्मा गाँधी का भारत आगमन हुआ था । कांग्रेस में अगर कोई पढ़ा-लिखा मुसलमान शमिल भी होता था तो बाकि मुसलमानों की नजर में उसकी हैसियत कम हो जाती थी, क्योंकि कांग्रेस की माँगे मुसलमानों की मांगों को अन्देखा करती थीं, यह सर सैयद का कहना रहा था और मुसलमानों की सहमति भी । "[10]

समय के साथ मनुष्य के सोचने का ढंग बदल जाता है । जो भी मनुष्य कार्य करता है, उसके मरने के बाद भी वह जिन्दा रहता है । इस दुनिया में बहुत सारे ऐसे लोग थे, जिंहोंने संसार को सुधारने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया । वे आज जिन्दा नहीं है, परंतु उनके कार्य उन्हें अमर बनाते हैं । इसी सोच को उपन्यास में जहाँआरा बेगम के कथन से स्पष्ट किया है, "वक्त और जमाना बदलता है । ... और उसके साथ इंसान के सोचने का ढंग भी । दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने की कोशिश करनेवालों में न तो आज राजा राम मोहन राय जिन्दा हैं, न सर सैयद, न स्वामी रामकृष्ण । उनका काम और नाम मौजूद है । "[11]

उपन्यास में कई चिंताओं को व्यक्त किया गया है । धर्म, जाती, संस्कृति, राजनीति से लेकर मानव मूल्यों के ध्वंस आदि को लेखक ने अपने पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । साधारणत: मनुष्य धर्म और संस्कृति को एक साथ जोडकर देखने का प्रयास करता है, परंतु उपन्यासकार का मानना है कि ये दोनों अलग-अलग चीजें हैं । प्राय: संस्कृतियाँ बदलती रहती हैं । कई संस्कृतियाँ अस्तित्व में आती हैं और मिट भी जाती हैं । संस्कृति धर्म न होकर उसका मुखौटा है । इसको उपन्यास के पात्र मौलवी किफायतुल्लाह के कथन से स्पष्ट किया है, "तहजीब और मजहब को मत गडबडाओ। तहजीब एक आनी-जानी चीज है, कितनी बार बन और मिट चुकी है और बन और

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

मिट रही है । छोटी-छोटी चीजें लंबे जमाने तक चलनेवाली तहजीब का बहाना बनती हैं और इससे भी मामूली, उसके खात्मे की वजह । तहजीब असलियत नहीं मुखौटा है । "[12] शिक्षा से मनुष्य का विकास होता है । शिक्षा अलग-अलग भाषाओं में प्राप्त की जा सकती है । प्रत्येक भाषा को किसी-न-किसी धर्म से जोड़ने का प्रयास किया जाता है । यह परंपरा बहुत ही खतरनाक है । इस ओर उपन्यास में ध्यान आकृष्ट किया गया है । उपन्यास का पात्र लाला महेश्वर दयाल हिंदू होते हुए भी उर्दू में व्यवहार करता है, यहाँ तक कि उसके खानदान की चार पीढ़ियों से उर्दू का प्रयोग होता आ रहा है । शिक्षा और भाषा को किसी धर्म या देश से जोड़ने की इस प्रक्रिया के खतरनाक बताते हुए लाला जी कहते हैं, "हमारे खानदान की चार पीढ़ियों ने इस जबान की परवरिश में हिस्सा लिया है । इल्म को मजहब या मुल्क के साथ जोड़ने का रवैया ही खतरनाक है । हमारे बुजुर्गों ने भी कभी फारसी सीखी होती, हमें तो खुद को उर्दू में ही रोते और उर्दू में ही गाते सुना है । "[13]

समय के साथ-साथ प्रत्येक धर्म की परंपराओं विचारों, रीति-रिवाजों आदि की पुन:व्याख्या होनी चाहिए । लेखक उपन्यास के पात्र संजीदा अली की सोच के माध्यम से स्पष्ट करता है, "पुरानी धार्मिक संस्थाओं की चाहे वह इमामत हो, हिजरत हो या जिहाद, एक तेजी से बदलते समय और समाज में पुन: व्याख्या जिन्दगी की फौरी जरूरत थी । "[14] प्रत्येक मनुष्य की श्रद्धा अलग होती है । धर्म में श्रद्धा की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है । यदि संसार के लोगों की श्रद्धा एक समान होती तो धर्म भी एक होता । इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को एक-दूसरों के धर्म और श्रद्धा का आदर करना चहिए । उपन्यास में इसे गाँधी जी के कथन के माध्यम से स्पष्ट किया है, "धर्म के प्रश्न में श्रद्धा सबसे ऊपर होती है, ... अगर चीजों के लिए सबकी श्रद्धा एक-सी हो जाए तो दुनिया में एक ही धर्म रह जाए । "[15]

सामान्य मनुष्य शांति एवं सांप्रदायिक सौहार्द चाहता है, प्रेम और बन्धुत्व का पक्षधर होता है । किसी भी समुदाय का आम आदमी कट्टरता को घृणा करता है । ऐसी ही कट्टरवादी शक्तियों का विरोध उपन्यास का नायक संजीदा अली करता है । उपन्यासकार के शब्दों में, "संजीदा को मुस्लिम उग्रवाद, ख्वाह बह वहीउल्लाही तहरीक हो, या हिंदू धार्मिक राष्ट्रवाद, वह तिलक हो, बिपिनचंद्र पाल हो या अरविंद एक समान अमान्य थे । "[16] हिंदू धर्म में भी सांप्रदायिक सौहार्द को माननेवाले लोग हैं । एक ओर सांप्रदायिकता को फैलाकर लोगों में द्वेष और घृणा फैलानेवाली शक्तियाँ हैं तो दूसरी ओर सांप्रदायिक सौहार्द और एकता स्थापित करनेवाली शक्तियाँ भी मौजूद हैं । इसे उपन्यासकार ने उपन्यास के पात्र सुहासिनी की सोच के माध्यम से स्पष्ट किया है, "अगर हुकूमत करनेवालों का काम बाँटना रहा है तो कुछ ऐसे भी लोग होते ही आए होंगे जो लोगों को एकता का सबक देते रहे होंगे । ऐसा न होता तो यह दुनिया शायद अभी तक कभी की तहस-नहस हो चुकी होती । "[17]

इस्लाम में स्त्रियों के लिए पर्दा पद्धति को महत्व दिया जाता था । बेपर्दा औरतों को बहुत ही तुच्छ नजरों से देखा जाता था । इसका वर्णन उपन्यास में कुछ इस प्रकार है, "तब बेपर्दा किसी को

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

देखा जा सकता था तो कमजात की औरतों को, या तवाइफों को । तवाइफें भी कोठे पर ही बेपर्दा दिखतीं थीं, बाजार में भी परदे से निकलती थीं । "[18] समय के साथ-साथ इस्लाम के रीति-रिवाजों में बदलाव आ रहा था । संजीदा अली प्रगतिशील एवं खुले विचारों वाला युवक था । उसने अपनी पत्नी और बेटियों को बिना परदे से आने-जाने का मशवरा दिया था । , "इस हौसला अफजाई का फायदा सबसे पहले फरीदा ने उठाया था । मौका निकालकर वह बिल्लो और बिब्बो के साथ बिना परदे के तांगे में चांदनी चौक और एडवर्ड पार्क घूमने निकल जातीं, लोगों की चुभती निगाहों की परवाह किए बगैर । "[19]

सन 1857 के गदर के बाद अंग्रेजों को पता चल गया था कि यदि भारत के हिंदू-मुस्लिम एक हो जाएँगे तो अंग्रेजों की शक्ति क्षीण हो जाएगी । इसलिए दोनों समुदायों में 'फूट डालो शासन करो' की नीति अपनाई । सन 1857 के गदर में अंग्रेजों द्वारा कत्ले आम हुआ था । मुसलमान उनसे दूर हो गए थे । कांग्रेस से मुसलमानों की नजदीकियां अंग्रेजों की आँखों में खटक रही थी । इसलिए उन्होंने मुसलमानों को यह विश्वास दिलाने का प्रयास कर रहे थे कि कांग्रेस हिंदुओं की पार्टी है । साथ ही बंगाल का विभाजन करके वे मुसलमानों से दोस्ती का नाटक कर रहे थे । इसे उपन्यास में कुछ इस प्रकार वर्णन किया है, "अंग्रेज शासकों के पास हिंदू और मुसलमान के बीच एकता न बनने देने का उपाय था कि वह प्रचारित और प्रमाणित करें कि कांग्रेस एक हिंदूवादी पार्टी है और उसे मुसलमानों के भले से कुछ लेना-देना नहीं । मुसलमानों का भला चाहनेवाले दरअसल अंग्रेज थे, यह साबित करने के लिए कर्जन ने उनके साथ 'इंसाफ' करते हुए बंगाल का विभाजन कर दिया था । "[20] बंगाल के विभाज से देश का हिदू दुखी था । हिंदू-मुस्लिम समुदायों के बीच तनाव निर्माण हुआ था । सांप्रदायिक विद्वेष बढ़ रहा था । इसको उपन्यास में कुछ इस प्रकार चित्रित किया गया है, "बंगाल का बंटवारा अगर हिंदू-मुस्लिम नहीं , महज बंगाली और गैर-बंगाली का मामला है तो उसकी मुखालिफत करनेवाले गंगा में स्नान करके या काली के सामने तिलक करके उसे धर्मयुद्ध की शक्ल क्यों दे रहे हैं? शिवाजी और प्रताप की जय-जयकार हो रही है और ओरंगजेब-अकबर विदेशी लुटेरे करार दिए जा चुके हैं! भारत माता की जय बोली जा रही है, और जो बोल रहे हैं वही उसकी जायज संतान है! हम लोग सब नजाइज औलादें हैं । "[21] मुस्लिम लीग की स्थापना कर मुसलमानों और हिंदुओं के बीच बहुत बड़ी दरार पैदा करने की कोशिश की गई । परंतु सारे मुसलमान मुस्लिम लीगी नहीं थे । गाँधी जी एक ऐसे नेता थे जो हिंदू-मुस्लिम के बीच सांप्रदायिक सौहार्द कायम कर एकता का संदेश दे रहे थे । गाँधी जी कहा करते थे कि, "मैं दोनों संप्रदायों को जोड़ने के योग्य बन सकूँ । "[22] संजीदा अली की सोच जैसे युवकों के लिए गाँधी जी सत्य, अहिंसा और एकता की प्रतिमूर्ति थे । और जीता-जागता आदर्श थे । इसलिए ऐसे हिंदू और मुस्लिम युवकों पर गाँधी जी का प्रभाव था । गाँधी जी से प्रभावित होकर स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया संजीदा अली ने हिंदू-मुस्लिम दंगों के विरोध में गाँधी जी के साथ दिल्ली में इक्कीस दिन का अनशन किया था ।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि 'बशारत मंजिल' एक ऐसा उपन्यास है जो स्वतंत्रता पूर्व मुसलमानों की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक परिस्थितियों से रू-ब-रू कराता है । यदि जारा खान के शब्दों में कहा जाए तो इस उपन्यास में, "एक मुस्लिम खानदान का इतनी बारीकी से चित्रण है इसमें कि मुँह से बरबस वाह निकल पडती है । वो रिवायतें वो आदतें, वो तहजीबें और वो हिमाकतें । सब कुछ मौजूद है इस उपन्यास में । भोपाल और दिल्ली शहर का इतनी खूबसूरती से जिक्र है कि आप खुद को वहाँ मौजूद पाते हो । मुझे नही पता कि ये लेखक की अपनी कहानी है या नहीं । पर लेखक की भाषा और कथानक पर जो पकड़ है उसके जादू से आप बच नहीं सकते । कहानी कहने के मामले में इस उपन्यास को एक नया प्रयोग कहा जा सकता है । और इस प्रयोग को इतनी सफाई से अमल में लाया गया है कि पता नहीं चलता कब हकीकत और कल्पना एक दूसरे में घुल मिल गए । "[23]

सन्दर्भ :

1. मंजूर एहतेशाम, बशारत मंजिल, पृ.-17
2. वही पृ.-57
3. वही पृ.-22
4. वही पृ.-23
5, वही पृ.-24.
6. वही पृ.-24 .
7. वही पृ.-29 .
8. वही पृ.-30
9. वही , पृ.-31
10. वही पृ.-31
11. वही पृ.-32 .
12. वही , पृ.-37
13. वही पृ.-124
14. वही पृ.-130
15. वही पृ.-158

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

16. वही पृ.-93

17. वही पृ.-119

18. वही पृ.-183

19. वही पृ.-183

20. वही , पृ.-55

21. वही पृ.-58

22. वही पृ.-175

23. http://zara-khan-blogspot.in/2013-12/blog.post-1653.html